(ISSN: 2393-8048)

International Seminar on September 16th, 2024
"Exploring the Frontiers of Interdisciplinary Research (ICEFIR-2024)"
Organized By: Nagpal Charitable Trust, Sri Ganganagar
Venue: Maharaja Agrasen Vidya Mandir School, Sri Ganganagar

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा का कलात्मक समेकन

मनोज कुमारी यादव, शोध छात्रा, शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान विभाग (I.E.R.) मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेशवा, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

शोध - सार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक केवल विषय-वस्तु का ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यवहार एवं मूल्यों का निर्माण करने वाला मार्गदर्शक होता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा का विशेष महत्व है, क्योंकि इसी स्तर पर बालकों के चरित्र एवं सोच की नींव रखी जाती है। प्राथमिक शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है। यह अवस्था न केवल बौद्धिक बल्कि चारित्रिक एवं नैतिक निर्माण की भी संवेदनशील अवधि है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को प्रायः एक पृथक एवं उपदेशात्मक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है, जिसकी प्रभावशीलता संदिग्ध है। इस संगोष्ठी पत्र का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा के "कलात्मक समेकन" की अवधारणा, आवश्यकता, रणनीतियों एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना है। कलात्मक समेकन से तात्पर्य है कि नैतिक मूल्यों को साहित्य, कविता, नाटक, संगीत, चित्रकला, कहानी कथन, शिल्प आदि कलात्मक क्रियाओ के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का स्वाभाविक अंग बना देना। इस पत्र में यह तर्क दिया गया है कि प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के दौरान, यदि उन्हें विभिन्न कलात्मक विधियों के माध्यम से नैतिक शिक्षा देने की कौशल-आधारित तकनीकों में दक्ष बनाया जाए, तो वे भावी पीढ़ी में मूल्य निर्माण को अधिक प्रभावशाली, रोचक एवं टिकाऊ ढंग से कर सकते हैं। शोध पत्र में कलात्मक समेकन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, व्यावहारिक शिक्षण मॉड्यूल, प्रशिक्षकों की भूमिका तथा आंकलन के वैकल्पिक तरीकों पर प्रकाश डाला गया है।

इस शोध-पत्र में नैतिक शिक्षा के कलात्मक समेकन की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, कहानी-कथन एवं रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से मूल्यों के विकास पर बल दिया गया है। कलात्मक गतिविधियाँ प्रशिक्षणार्थियों में संवेदनशीलता, सहयोग, अनुशासन, सहानुभूति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों को सहज रूप से विकसित करती हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि जब नैतिक शिक्षा को कला से जोड़ा जाता है तो शिक्षण अधिक रोचक, प्रभावी एवं स्थायी बन जाता है। अतः प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा के कलात्मक समेकन को अपनाकर भावी शिक्षकों को मूल्यनिष्ठ, सृजनात्मक एवं समाजोपयोगी बनाया जा सकता है।

प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं है, बल्कि बालकों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना भी है। प्राथमिक स्तर बालक के जीवन की नींव होता है, जहाँ उसके व्यक्तित्व, व्यवहार और मूल्यों का निर्माण होता है। ऐसे में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक तभी अच्छे नागरिक तैयार कर सकता है जब वह स्वयं नैतिक मूल्यों से युक्त हो। इसी कारण प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा का समावेश आवश्यक है। यदि यह शिक्षा कलात्मक विधियों द्वारा दी जाए तो उसका प्रभाव और भी गहरा होता है।नैतिक शिक्षा इसमें केंद्रीय भूमिका निभाती है। परंपरागत रूप से, नैतिक शिक्षा को एक अलग पाठ्यक्रम या नैतिक शिक्षा की कक्षा के रूप में देखा जाता रहा है, जहाँ मूल्यों को नियमों एवं उपदेशों की सूची के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ऐसी पद्धति बच्चों के मन में उबाऊपन की भावना पैदा कर सकती है तथा उनके वास्तविक व्यवहार पर सीमित प्रभाव डालती है। अतः, नैतिक शिक्षा को समग्र शिक्षण प्रक्रिया में, विशेषकर कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से, सहज रूप से समेकित करने की आवश्यकता है। इस हेतु प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण को नए सिरे से डिजाइन करना अत्यावश्यक हो जाता है।

नैतिक शिक्षा का अर्थ

नैतिक शिक्षा का अर्थ है बालकों में सत्य, ईमानदारी, सहयोग, करुणा, अनुशासन, सहनशीलता और जिम्मेदारी जैसे गुणों का विकास करना। यह शिक्षा व्यक्ति को सही और गलत में अंतर करना सिखाती है। नैतिक शिक्षा केवल उपदेश तक सीमित नहीं होती बल्कि व्यवहार में उतरने वाली शिक्षा होती है।

कलात्मक समेकन का अर्थ

कलात्मक समेकन का अर्थ है शिक्षा को कला से जोड़कर प्रस्तुत करना। इसमें संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, कविता, कहानी, खेल और गतिविधियाँ शामिल होती हैं। जब शिक्षा कला के माध्यम से दी जाती है तो बालक उसे आसानी से समझते हैं और लंबे समय तक याद रखते हैं। कला भावनाओं को जगाती है और सीखने को रोचक बनाती है।

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण में आवश्यकता

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण का उद्देश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जो बच्चों को केवल पढ़ाएँ ही नहीं बल्कि उन्हें अच्छा इंसान भी बनाएँ। आज के समय में समाज में बढ़ती हिंसा, स्वार्थ और अनुशासनहीनता को देखते हुए नैतिक

शिक्षा की आवश्यकता और बढ़ गई है। शिक्षक प्रशिक्षण में यदि नैतिक शिक्षा को कलात्मक रूप में शामिल किया जाए तो भावी शिक्षक बच्चों को अधिक प्रभावशाली ढंग से मार्गदर्शन कर सकते हैं।

कलात्मक विधियों द्वारा नैतिक शिक्षा

1. कहानी और कविता

कहानियाँ और कविताएँ बच्चों के मन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। ईमानदारी, मित्रता और सहयोग पर आधारित कहानियाँ नैतिक मूल्यों को सरल बनाती हैं।

2. नाटक और अभिनय

नाटक के माध्यम से बालक वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को समझते हैं। जैसे – सत्य बोलने का महत्व, बड़ों का सम्मान, सहयोग की भावना आदि।

3. संगीत और गीत

नैतिक गीत बच्चों में सकारात्मक सोच उत्पन्न करते हैं। गीतों के माध्यम से अनुशासन और प्रेम की भावना विकसित होती है।

4. चित्रकला और पोस्टर

चित्र बनाकर बच्चे अपने विचार व्यक्त करते हैं। स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और भाईचारे जैसे विषयों पर चित्र नैतिक शिक्षा को बढ़ाते हैं।

5. खेल एवं गतिविधियाँ

समूह खेलों से सहयोग, नेतृत्व और अनुशासन का विकास होता है। इससे बच्चों में सामाजिक गुण उत्पन् होते हैं।

कलात्मक समेकन के लाभ

1. बच्चों में रुचि बढ़ती है।
2. नैतिक मूल्य व्यवहार में उतरते हैं।
3. सीखना सरल और आनंददायक बनता है।
4. बच्चों का भावनात्मक विकास होता है।
5. समाज के लिए अच्छे नागरिक तैयार होते हैं।

नैतिक शिक्षा के कलात्मक समेकन की अवधारणा

कलात्मक समेकन एक शैक्षणिक दृष्टिकोण है जिसमें विभिन्न कलात्मक विधाएँ (जैसे दृश्य कला, प्रदर्शन कला, साहित्यिक कला) शिक्षण के उपकरण एवं अभिव्यक्ति के माध्यम बन जाती हैं। नैतिक शिक्षा के संदर्भ में इसका अर्थ है:

- मूल्यों की समझ को कहानियों, नाटकों, कविताओं के माध्यम से विकसित करना।
- नैतिक दुविधाओं को भूमिका निर्वाह (रोल प्ले) या नाटकीकरण के जरिए अन्वेषण करना।
- सहानुभूति, सहयोग जैसे सामाजिक-भावनात्मक कौशलों को सामूहिक संगीत, कोरल गायन या सामूहिक चित्रकारी के माध्यम से बढ़ावा देना।
- स्थानीय सांस्कृतिक कलाओं (लोक कथाएँ, लोक नृत्य, शिल्प) के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संप्रेषण।

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण में इस समेकन की आवश्यकता

- **प्रभावशीलता:** कला मनोभावों को सीधे संबोधित करती है। नैतिक शिक्षण को उपदेश से अधिक अनुभव बनाने में सहायक।
- **बाल-केंद्रितता:** कलात्मक गतिविधियाँ बच्चों की रुचि, कल्पनाशीलता एवं सक्रिय भागीदारी को आमंत्रित करती हैं।
- **बहु-बुद्धि सिद्धांत का समर्थन:** हावर्ड गार्डनर के बहु-बुद्धि सिद्धांत के अनुरूप, यह दृष्टिकोण भाषाई, अंतःवैयक्तिक, शारीरिक-गतिक, स्थानिक आदि बुद्धियों को संलग्न करता है।
- **याद रखने की क्षमता में वृद्धि:** कला के माध्यम से सीखे गए मूल्य दीर्घकालिक स्मृति में संग्रहित होते हैं।
- **समावेशिता:** कला विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चों के लिए अभिव्यक्ति के वैकल्पिक रास्ते खोलती है।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में समेकन हेतु रणनीतियाँ एवं मॉड्यूल

प्रशिक्षण कार्यक्रम को निम्नलिखित घटकों के साथ डिजाइन किया जा सकता है:

क. सैद्धांतिक आधार :

- नैतिक विकास के सिद्धांत (पियाजे, कोहलबर्ग, गिलीगन)
- कला-आधारित शिक्षण के दर्शन (ड्यूई, रबीन्द्रनाथ टैगोर)

- भारतीय शिक्षण परंपराओं में कला एवं नीति का समन्वय (तक्षशिला, नालंदा)

ख. व्यावहारिक कौशल विकास

- **कहानी रचना एवं कथन:** नैतिक मूल्य-आधारित कहानियाँ लिखना, सुनाना एवं चित्र-कथन (स्टोरीबोर्ड) बनाना।
- **नाटक एवं भूमिका निर्वाह:** सामाजिक-नैतिक समस्याओं पर लघु नाटक लेखन एवं मंचन।
- **कविता एवं गीत:** मूल्यपरक कविताएँ रचना, स्थानीय लोकगीतों का संकलन एवं उपयोग।
- **दृश्य कला:** कोलाज, पोस्टर, कार्टून के माध्यम से सामाजिक संदेशों को अभिव्यक्त करना।
- **शिल्प एवं हस्तकला:** सहयोग से समूह प्रोजेक्ट, पुनःचक्रण (रिसाइक्लिंग) के माध्यम से पर्यावरणीय मूल्य।

ग. पाठ्य योजना निर्माण :

- विभिन्न विषयों (भाषा, सामाजिक विज्ञान, गणित, पर्यावरण अध्ययन) में कलात्मक विधियों से नैतिक मूल्यों के समेकन हेतु पाठ योजनाएँ तैयार करना।
- गणित में सहयोग के मूल्य को समूह गतिविधि के माध्यम से; पर्यावरण अध्ययन में प्रकृति के प्रति आदर को प्रकृति चित्रण के माध्यम से।

शिक्षक की भूमिका

शिक्षक समाज का निर्माता होता है। शिक्षक स्वयं अनुशासित, ईमानदार और संवेदनशील होगा तभी वह बच्चों में ये गुण विकसित कर सकेगा। शिक्षक को कला आधारित शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए ताकि बच्चे रुचि के साथ सीखें। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक एवं कलात्मक गतिविधियों को विशेष स्थान देना चाहिए।

प्रशिक्षकों की भूमिका में परिवर्तन

- प्रशिक्षक स्वयं कला के संवाहक बनें; केवल सिद्धांत बताने वाले नहीं।
- एक सुविधाकर्ता के रूप में, जो सुरक्षित, रचनात्मक एवं विचार-उत्तेजक वातावरण निर्मित करे।
- विद्यार्थी-शिक्षकों की व्यक्तिगत रचनात्मकता को पहचाने एवं प्रोत्साहित करे।

चुनौतियाँ

यद्यपि कलात्मक समेकन उपयोगी है, फिर भी कुछ समस्याएँ हैं जैसे –

- प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी।
- समय का अभाव।
- संसाधनों की कमी।
- पाठ्यक्रम का दबाव।

इन समस्याओं का समाधान उचित प्रशिक्षण और योजनाओं द्वारा किया जा सकता है।

समाधान के सुझाव:

- प्रशिक्षकों के लिए विशेष कार्यशालाएँ आयोजित करना।
- स्थानीय कलाकारों/संसाधन व्यक्तियों के साथ सहयोग।
- प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में कला-एकीकरण को अनिवार्य घटक बनाना।
- डिजिटल माध्यमों (ऑडियो-वीडियो, एनीमेशन) का उपयोग।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा का कलात्मक समेकन अत्यंत आवश्यक है। कला के माध्यम से दी गई शिक्षा बालकों के मन पर स्थायी प्रभाव डालती है। इससे न केवल अच्छे विद्यार्थी बल्कि अच्छे नागरिक भी तैयार होते हैं। यदि हमारे शिक्षक नैतिक और कलात्मक दृष्टिकोण से प्रशिक्षित होंगे तो हमारा समाज भी सशक्त, संस्कारित और उज्ज्वल बनेगा।

प्राथमिक शिक्षक, बालक के भविष्य के निर्माता हैं। यदि उनके प्रशिक्षण में ही नैतिक शिक्षा को कलात्मक संवेदनशीलता के साथ जोड़ दिया जाए, तो वे कक्षा में एक ऐसा सजीव, आनंदमय एवं मूल्यपरक वातावरण रच सकते हैं जहाँ नैतिकता एक जीवन शैली बन जाए। इस हेतु शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में मौलिक सुधार की आवश्यकता है। कला को एक "विषय" नहीं, बल्कि समस्त शिक्षण प्रक्रिया का "माध्यम" बनाना होगा। यह निवेश भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण में एक मजबूत नींव का काम करेगा और एक अधिक संवेदनशील व सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण में सहायक होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- कोहलबर्ग, लॉरेंस. *द फिलॉसफी ऑफ़ मोरल डेवलपमेंट.*
- टैगोर, रबीन्द्रनाथ. *शिक्षा* (रचनावली में संकलित)।
- NCERT. *प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा: एक रूपरेखा*।
- Eisner, E. W. *The Arts and the Creation of Mind*.
- गांधी, एम.के. *बुनियादी शिक्षा*।